



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई -17 जुलाई, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

अदापुर, प्रखड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। अगले 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचङ्गा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधि से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 10 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ढ		मूंग एवं उड्ढ की तैयार फलियों की तुड़ाई अपिलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चरा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजारा तथा मवका की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंदू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

अरेराज प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधि में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचङ्गा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधि से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 10 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ढ		मूंग एवं उड्ढ की तैयार फलियों की तुड़ाई अपिलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजारा तथा मवका की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंदू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

बंजरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः—

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधि में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचङ्गा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधि से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा० बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा० प्रति हेक्टेयर रखें।</p>

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ढ		मूंग एवं उड्ढ की तैयार फलियों की तुड़ाई अपिलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजारा तथा मवका की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंदू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचङ्गा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधि से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 10 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ढ		मूंग एवं उड्ढ की तैयार फलियों की तुड़ाई अपिलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजारा तथा मवका की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंदू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

चकिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधि में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचङ्गा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधि से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा० बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा० प्रति हेक्टेयर रखें।</p>

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूँग उड्ड		मूँग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अपिलंब कर लें। मूँग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजार तथा मवका की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंदू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

चिरैया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचङ्गा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधि से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 10 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ड		मूंग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंदू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com





कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

छौरादाना प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः—

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तेयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रत एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सुखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुवाई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में साधारानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुवाई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुवाई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
मूँग उड्डद		<p>मूँग एवं उड्डद की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूँग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।</p>

सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलधोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हों तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा /हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र



पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)**

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

ढाका प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः—

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घण्टा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचडा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्ठी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्ठी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
मूँग उड्ढ		<p>मूँग एवं उड्ढ की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूँग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्ठी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।</p>

सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजरथली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6-7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बुक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिटटी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंदू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा / हेटो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

घोड़ासन प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुवाई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुवाई अतिशायी रूप संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुवाई करें। बीज दर 20 किग्रा 0 प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
मूँग उड्ढ		<p>मूँग एवं उड्ढ की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूँग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।</p>
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा	<p>उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुवाई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।</p>

आले	खरीफ प्याज
लीची	लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1.5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट औफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा	पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे	पहले से तेयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० व्हलोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिक्षण	कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु	गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंदू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरान्त अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा / हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

हरसिद्धि प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सुखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
मूँग उड्ढ		<p>मूँग एवं उड्ढ की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूँग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।</p>
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	<p>उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।</p>
खरीफ प्याज		<p>प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की</p>

		ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1.5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दें।
फल परिक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहें। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20-30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा / हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

कल्याणपुर प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः—

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधि में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रत एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सुखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुवाई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में साधारणी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुवाई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुवाई करें। बीज दर 20 किग्रा 0 प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
मूँग उड्ढ		<p>मूँग एवं उड्ढ की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूँग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।</p>
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	<p>उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुवाई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।</p>
खरीफ प्याज		<p>प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।</p>
लीची		<p>लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति</p>

		प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ़ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलधोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

कोटवा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधि में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीचों तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रत एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुवाई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुवाई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुवाई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमेडाकलोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
मूंग उड्ड		<p>मूंग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुडाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।</p>
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	<p>उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुवाई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।</p>
खरीफ प्याज		<p>प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।</p>
लीची		<p>लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा</p>

		के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरोपाइरीफाँस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोट्ठ) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेटो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाई, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

मधुबन प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घण्टा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचङ्गा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्ठी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्ठी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधि से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 1 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ढ		मूंग एवं उड्ढ की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्ठी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	मिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— मिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा

		दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेक्टर की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)

डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाई, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

मेहसी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घण्टा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचङ्गा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्ठी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्ठी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधि से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 1 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ढ		मूंग एवं उड्ढ की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्ठी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	मिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— मिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा

		दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेक्टर की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाई, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घण्टा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचङ्गा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्ठी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्ठी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधि से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 1 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ड		मूंग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्ठी पलटने वाले हल से जमीन में गाढ़ दें।
सब्जियाँ	मिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— मिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा

		दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेक्टर की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाई, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

पहाड़पुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घण्टा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचङ्गा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्ठी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्ठी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधि से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बिविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 1 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ड		मूंग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्ठी पलटने वाले हल से जमीन में गाढ़ दें।
सब्जियाँ	मिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— मिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा

		दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिष्काण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेक्टर की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
 पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
 डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाई, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

पकड़ीदयाल प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।

- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रत एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूँग उड्ड		मूँग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूँग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाढ़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मीली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।

फल परिक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगायें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हों तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेक्टर की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविंद कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र

पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)



डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

पताही प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सुखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुवाई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूँग उड्ड		मूँग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूँग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुवाई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुवाई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुवाई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सावधानी बरतें।

दूधारू पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हों तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेक्टर की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

फेनहारा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रत एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सुखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधि से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में साधारणी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा 0 प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूँग उड्ड		मूँग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूँग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकत है। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजारा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरोपाइरीफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते

		रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ—साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्ड्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलधोटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा /हेक्टर की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविंद कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण-845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

रामगढ़वा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग

		<p>सदैव मिट्ठी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्ठी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुआई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सुखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुआई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा 0 प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
मूँग उड्डद		<p>मूँग एवं उड्डद की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूँग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्ठी पलटने वाले हल से जमीन में गाढ़ दें।</p>
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	<p>उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।</p>
खरीफ प्याज		<p>प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।</p>
लीची		<p>लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।</p>
चारा		<p>पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजार तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राइस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।</p>
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		<p>पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरिफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।</p>
फल परिरक्षण		<p>कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।</p>
दूधारु पशु		<p>गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।</p>
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	<p>अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की</p>

	बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेक्टर की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।
--	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

संग्रामपुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग

		<p>सदैव मिट्ठी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्ठी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्राम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें।</p> <p>अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुआई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सुखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुआई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।</p>
मक्का		<p>वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा 0 प्रति हेक्टेयर रखें।</p>
गन्ना		<p>रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।</p>
मूँग उड्डद		<p>मूँग एवं उड्डद की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूँग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्ठी पलटने वाले हल से जमीन में गाढ़ दें।</p>
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	<p>उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।</p>
खरीफ प्याज		<p>प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।</p>
लीची		<p>लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्राम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्राम यूरिया, 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।</p>
चारा		<p>पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजार तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।</p>
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		<p>पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी०ली० क्लोरपाइरिफॉस दवा 1 ली० पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।</p>
फल परिरक्षण		<p>कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।</p>
दूधारु पशु		<p>गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मकिखियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।</p>
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	<p>अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की</p>

	बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेक्टर की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।
--	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

तेतरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30

		किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ड		मूंग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाढ़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1.5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरोट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलधाँट) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा /हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग

करें। लीची के बगीचों में जुलाई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13 जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

तुरकौलिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः—

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30

		किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ड		मूंग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाढ़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1.5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरोट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलधांटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा /हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग

करें। लीची के बगीचों में जुलाई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13 जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

केसरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः—

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30

		किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ड		मूंग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाढ़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1.5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरोट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलधाँट) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हों तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा /हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग

करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

रक्सौल प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः—

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30

		किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ड		मूंग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाढ़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1.5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरोट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलधाँट) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हों तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा /हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग

करें। लीची के बगीचों में जुलाई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com



कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण—845429 (बिहार)
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा



मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13 जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी

दिनांक 12.07.2019

सुगौली प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०य०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः—

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 किमी/घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेडों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30

		किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अग्रात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहते हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानों को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा 0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोकोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उड्ड		मूंग एवं उड्ड की तैयार फलियों की तुड़ाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाढ़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ, करैला लौकी खीरा ओल	उच्चास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे— भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट-व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर-पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचडे 15 से 20 दिनों के हो गये हो, में खर-पतवार निकालें। पौधाशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढक सकते हैं। कीट-व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1.5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरोट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरूप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वर्ती खेती में करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जायेगी तथा दूधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधे		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़ में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने, करैला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओं के निवास स्थान की साफ-सफाई करते रहे। दूधारु पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच०एस० (गलधाँट) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा /हेठो की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग

करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com





